

13

140/18^N

commentary on Gāhalakhava Ashloky?

ईदं उक्तं कंग हलाच वस्थु दाहर्न
 संपुरनं समाप्तं सु नमंगलं सुहीर
 नव वीमंगलं दती मास्यैत्र सुद्व॥

तुहिं देव देवाक ई देव शोवाक हं को न मेवा ते ने नाम ली ज्ये तुहिं वे दवा नी व
 स्वा नी न वा नी तुहिं न क दा नी क पा वे नी कि ज्ये ॥ ३ ॥ नो मा त ते शों क हं वा
 त गो शों द्र गों शो त मे रु क पीठ उ क पी ज्ये प र्व ह मा या क गो मे हे दा या व नं
 उ हि व य नी व नं रु हि व य द दी ज्ये ॥ ४ ॥

श्रीगणेशायनमः॥ ग्रहलाघवस्य उदाहरणं भाषां॥ संवत् १७८८ साके १८८१
अयनांशा २०१७ साके मो चौ दहस्यै १४४२ वै यात्मीसक
मीकीन जो सेष जहो २१८ सोये कै न नि वर्षे ग्रहलाघौ को व
४ स्था ने न इं॥ पुनि सा द्वे वं २१८ म्याच ह ११ सौ मागु लिन लद्युं १९
चक्रां॥ सेषं १० वकी १२ हतं १८० पुनि चैत्र सुक्र पने वा
नै गत मास ८ दीन जुनं जातं १२८ सोपथक १२८ पुनः

२॥

पुनः चक्रं १९ पंचयुगं २५ लुप्त

प्रथमक १५ येकत्रल धीषद २६ ल द्ये ल वमदिवसा २
नेहुत्त नील इगा कमि कीन जा गो ल हर्गिनः ३५ पुनः स
प्रगणं जा नं १ जो वारु येकु कमी लावे यो ये कु जो नी देव स्रोतं।
ये कु ल धी धी क लावे देह नं ये कु चरा इदिन सोमवार
को लं कु ल न्ये जान व ल ल हर्गिनः ३५ पुनः इती ल हर्गिन वी
वी धी लाय मध्ये मा धी कारः स्वपनगेती ल हरगना ३५ १९ च

चंक्रं १० दी २ घंटा न ३८ पुनः दिग्यु १० कं जावं ४८ पुनः ये
कच जुवं १७ ५ पुनः सुमर ३३ मं कं न घं ५ सुधी मात्पद्मो पं ११
सागः सुधी मात्पाये पांचने दुस्पनी जइ गां जेने जावं १३ पु
नः पत्री ३० घं ३९ पुनः गवनी नी ५ सुक्र पने वावं मन
व पुनः जु कं ५९ पुनः चक्रा १० गां ५ जु दं जावं ४० १६ सो

स्वा ३८५१ येन पनग ७० कंल धुं ५८ स्वेपं ३१ सोसाठी छसे
गुनो जानं १८८० पुनिमनरीसौ ७० काठुलि नल धुं २८ स्वेपं ४०
पठी ६० धुं जानं १४०० पुनः पनग ७० नकं लधुं ३४ स्वेपं
सागः लसी कौती ननागली नने धने लं स्पदी जानव ५८
४८ २८ ३४ ने दुपरी जाई मां मोकमी की न जानं ३८ २४ ३० २८
पुनी लदुर्गनः धनो ३८ ५१ पुनी डेठ सौ ५५० सों बाठु ली नल

ध्वं २८ सेपं ५१ षष्ठी ८० ध्वं जातं ३० ६० पुनः प नीथी पप० क
कंलध्वं २० सेपं सागः भागद्वयं २५ २० ते जो सगरी के भाग क
जी संसक ग है ते ह की घटी पन नमो घाटा ^{दे} देव सगरी जा हों
घटी पन नमो न घटे ता हों चं सनने ये कु चं सनने के घटा उव
नोई हों घटी नमो घटे जातं ३८ २४ ७ १८ पुनः गशा
सकं कोर्थः तीर सगरी भाग लै उ पन घजे पुनी वार ह सें से

पुनीष्टुवांकाः ७१२१३१५०१० चक्र १० सो गुणीतं जातं
२१२३१५०१० सेदिनगननवनेटमो घाटावो जातं २१५४५५५५
पुनीष्टे पांकाः ०१२७१३८१० मै जुं वं जा गो म घा मं ३१४१५३५५
अथ नो म दी घे नी न्प्र हर्ग ए को द स १० सो गुणे घ मे दी ई जा
इ मां ३०५१०११३०५१०१ य क जा इ मां व न ई स सो जा गु ली न
लघुं २०७९१२ चर ५ जा ग त्र यं दु स री जा ई मां मे दी ह री
७३ सो जा ग ली न उ ई लघुं ५ ५११३ पुनीजे व न इ स सौं जा

२११

छलीन नेही मोघटा बो जावं २७७ २७१ २२२ २१ शालकं जावो दी
न गन न वनेटः ९१० १२७ १९२ २७ बां कांः ११ २५ १३२ १० चक्र १९
घ्राः ११ ५ १८ १० दीन गण न वनेट मोघटा बो जावं ९१२ ५ १९२ १२
झे पां काः १० ७ १८ १० मै लु नो मध्यमः ८ १२ १२७ १९२ १२ १२ १२ १२
केंद्रः प्रहम पा घनो ३० ५१ पुनी नी न सों गु नो सो दिवा ११ ८ ५३
११ ८ ५ ३ १ एक जाई गां प्रठा इ स २ ८ सों जां न लक्षं जाग नयं ४ २३ १
१० १ १७ वे दु सरी जाई गां जो रे जावं १२ २७ ८ १९ २ १९ १९ पुनी प्रह

गुनी

गण घ नो ३६५१ पुनी त्रिगि ससो जा गु ली न लघं भा ग द्यं
 १०३। पं ८। सो कं ला सुं न्त्र नं १२७४। ३५। १९। जा तो दी न ग म न न व
 वे टः पु नः रा शा द म् कं १। ४। ३५। १९ पु नी छ्वां काः ४। ३। २७
 ०। च क्रे १९ पा गु नी दं ता दं ६। ५। ३३। १० रा प्रा। त्म कं ग्र हे पु न्यु नं
 जा नं ६। २९। २। १९ पु नः द्वे पां काः ८। २९। ३३। १० तै र्जु नं जा तो
 म ध्य सैः ३। २८। ३५। १९ त्र घ गु बो प्र ग ष घ नो ३६५१ पु नी वा न् १५
 ह १२ सो जा गु ली न लघं जा ग त्र यं ३२९। १५। ० पु नि त्र प्र ह ग र्न घ नो

५७११

३६५१ उनिस्तनी ७० सों जागुति न लखं जागदयं ५६२६ सोली
पितासु हीनं जातं ३२८१९८१३४ पुनी सुशात्मकं १०१२८१९८१३४
१८ उनिष्ठांकाः ७२६१९८१० चक्रेन १९ गुनी तं जातं ४१९९१४२१०
पुनः न्युनं जातं ८१८१३६ दोषांकाः ७१२१९६१० मैर्लुनं
जागो मध्यमः ११९०१५२१३४ अथ जागो के द्रानयनं न्यहर्गनघ
नो ३६५१ तीन सों ३ गुणो ११८५३ सोदीमा ५५८५३ यकत्र पंच ५
नक्तं लखं जागत्रयं मंशादिः २३७०१३६१० पुनः दुसरी जाइगां

११७११

यकसौ यक्यासी १८१ सो जागुली नलघं जागत्रयं मंसादीः ६५
२८१० ७ नलो रलो मां जा वं २४३६५ १० जाश्यात्मकं ९१६५
१० प्रूवांकाः १११६१२१० चक्रप९ सो गुनी नं जानं ३१२६३८०
दिन मन न वरेट मो घटावो जानं ५१९१२७११० द्वेपांकाः ७१२०
९१० तैर्जुनं जातो मध्यमग्रहः ०१२९१३६११० प्रथमनेः ॥
अहर्गणघरे ३९५१ पुनिगीम ३० सो जागुली नलघं जाग
त्रयं मंसादीः ११११४२१० पुनिअहर्गनघरे ३९५१ पुनी

का	रे	ई	उ	म	उ	रु	रु	श	रा
५२	७९०	८	३९	१८६	५	३९	२	३	
८	३५	४९	२६	२४	०	०	०	९९	

इति मध्याह्नाची कानः

नकुसुर्चदि मद्यमाष्टीकिर्कः दयः सगनयः मद्यमसुर्च

सु	च	उ	मं	उ	मु	सु	रा	ना
८	५	३	८	३	१	०	२	३
९३	११	१५	२	२८	१०	२९	२९	४
३१	१४	१६	२७	३५	५२	३६	१०	२३
५२	७९	६	३१	१८६	५	३१	२	३
८	३५	५१	१६	३४	०	०	०	११

घनो ८।९।१३।३१ पुनीसुर्च
 को मंदे च घनो २।१८।०।० पु
 नीसुर्च को मं च मो घटा बोर्जि
 व सों इ हा न घट हा ह नो वे ही
 ने मं दो च की रा सी मो वार ह १२
 प्री र जो रे जा र १४।१८।०।० पुनीसुर्च घटा य न। वं ॥
 ८।८।४६।२३ य ह को ना उ मं द के इ जो मे पा दी छ।

मंद

नकुसुर्चदि मद्यमाक्षीकिंकिः दयः सगनयः मद्यमस्य

सु	च	उ	मं	उ	मु	सु	प्रा	जा
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३
१३	१७	१५	२	२८	१०	२९	२९	३

घनो ८।९।१३।३७ पुनीसुर्य
कोमंदेच घनो २।१८।०।० पु
नीसुर्य कोमं च मोघय बोर्जावि
वसों इहां न घट रह नो मे ही
नें मंदेच की रासी मोवार ह १२

प्रीरजारे जा रं १४।१८।०।० पुनीसुर्ज घटय जा रं ॥
८।८।०६८।१३ य ह को ना उ मंद के र जो मे पा दी द्वा

मंद

॥ ५ ॥

शरी होइ नौ फल घन करव जो दुलारी छ। शरी होय नौ कन
सोई हं दुलारी केंद्र है वेहि ने कन करव पुनी केंद्र घर वसे
घने ८। ८। ४८। २३ पु निजु ज करव जो निन रासी ते कमी
होइ तेहि कोना मनु ज दोस्त्रि जो एति जो नीन रासी ते अ
धिक अ। ठ रासी लगे छ। सो साधव १। जो नव किं शरी होइ
नौ ने ही ते वा रहल गे वा रह मो सो घ व ॥ सोई हं छ। शरी हो

ने ही ने द्यु मे स्वे। चो जा तो जुजः०। ८। ४६। २३ पुनि जा
 ग करुन गरी को तीना ३० गुन करुन प्रसा जोरुव ने ह के।
 न। उ जा ग॥ सो इ हो नाशी न हति ने ही ने सू न्यु मो जो मो जा तो
 जा ग दीः ८। ४६। २३ पुनि न व प्रो। ए जा गु ली न ल वं ० से
 ने ८। ४६। २३। सो स ठि गुन की न न रे के प्र के जो रे जा नं ५२८। २३ पुनी
 न व सो। ए जा गु ली न ल वं ५८। शो पं ४१२३ सो। स ठि गुन की न

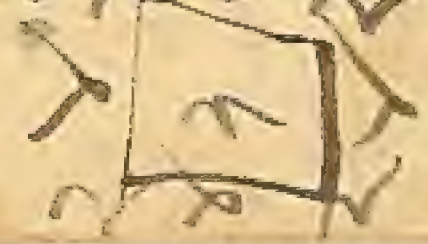
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

ननेके प्रकुं जोरे जातं १२८। पुनिनव ९ सों जागु लीन नखं २९
 शीपं ४। १३ सों शी ६० गुनं की नगर के प्रक जोरे जावें १८३। पुनी
 नं व ९ सों मां गुली न जागत्रयं ०। ५८। २९। पुनिवीश सों २० चं मे
 यय जावें १९। ११। ३१। गो। मुत्री का के के गु न व सो गो। मुत्री का
 गुनी तं जावें मु न्ने न गु पि यं सु मे पुनी नने के प्रकुं क न के नने के त

०	५८	३९
१९	१९	१९
१	१	१
३१	३१	३१

०	५८	३९
०	१११	५५५
०	५८	३९
०	११९८८९	

प्रकुं सा ठी ६० सों जागु लीन नने ५५९
 हे के मध्य के प्रकुं मो जोरे



०	५८	३९
०	१११	५५५
०	५८	३९
०	११९८८९	१७९८

गजाश्विनो २८ गोदाहना ३९ गङ्गा क्रता ४८ पयोधो वासा
५४ ॥ द्विरगे पु ५७ ॥ ५७ मिता हुताश वासा ५९ शरवे हा
४५ त्रिगुणा ३९ छति १८ ॥ ख० मार्क ॥ ५॥ जौ मा की ज्य
विहीन मध्यमरविः स्यात्तथा शुके द्रुविद्रु गो रु क्तमी
दं रसो ६ छमिनना द्युद्यंत दशादि नैः १५ ॥ न काश्वादि
फल क्रमादि ह ग तां को सौ क्ष या ध्या हुता च्छे षा द्वा रा कु १५
लघादि न युग यं दि न्द्र ल वा द्यं फलम् ॥ ६ ॥ ख० गोश्वि
नो २८ त्रि मरुतो ५७ हा ग जा ८५ नवाशा १०९ सिद्धे दवः १२४

ॐ स्वदहनाहितयोऽ१३० स्तु जोंकाः॥ मां शबुघ स्यख० मिना१२
कुइ शो२१४ पक्षा२८ देवाः ३३ शाननकमिता ३५ रसव
नृयः ३६ स्तुः ॥ ७१ रेवे० इ १४ ह्रीं मि २७ नवाग्नयो ३८ न
दध यो ४८ क्षाक्षा ५५ नग ह्या ५७ गउ रोः ३३ क्रम्या ५० म
रसे ६ श ११ वि म्या १३ मन वो १४ दि बीराचं द्रा १५ १५ क्र
मात् ॥ २० गे ५९ खक्र ता ४० ख पं र्णा ६० ग ब्रन गा ७७ गो
६० ६० त्रि नं द ६३ शने ३३ ज्यो ४६ दि ७ प ७ ६ मि ३ मन ११
ग ८ ग्रह ला र्थां न्मं द के दं कु जात ॥ ८॥ ॥ १॥ मृदु के दं न

११

०

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

जोस्यकादिना १५ प्राः फलमंकः प्रगतस्तद्वनितैष्यात् ॥ पुरीडा
षहतादिना १५ प्रा युक्तो दश १० नक्तः फलमंककादिमां
दम् ॥ १५ ॥ प्राज्ज्यमेचरफलस्तदलंप्रदद्यतस्माच्चमां

६ मरिचं विदधीत मध्ये ॥ द्राक्षैश्च दन्ते पिचविलोमसतश्च
शीघ्रं न्यवेद्यं तत्र विदधीत न वेत्तु स्फुटोऽसौ ॥ १० ॥ मां
दां कांतरमाकर्ष्य शृगुरुणां नक्तं वाशान् गौः ७५ इति ॥ ५
श्वशर्मे ३० ॥ विद्रुग्गोर्द्विरुहते पुपुजाजितं तदद्यात् प्राग्
दितौ म्रुतु स्फुटा सा ॥ ११ ॥ जौमाश्च लांकविवरं शरह
त्स वाशां ५ शां व्यं त्रीं हतुक्तं तदुहं ४ द्विरुगुणाश्च ५ नक्तं म्रु ॥ १२ ॥
तद्दीनयुक्तं क्षयचयेच म्रुतु स्फुटा सा स्यात् ॥ यच्चैद्बहु
रुणा सति ता तु वक्ता ॥ १३ ॥ कुकारयोश्च लज्जवत्सग

नवसोम दस्य य न्युयके सं सचटीन मो जो वेजा ते
क २१२८ १९०१२२ पु निफु षकी न २१२८ १९०१२२ ते ही
त पावे च व पंठा ती स न सां च र ष पंठा प ल जा ते होत है जो मेष
संक्रांती के दी रागर्द्ध के जैसा गुरु द्य। या हो प वेदि को ना ठ प ल जा
सो। मा। हा। ठ न के प ल जा है ४।३० सो प ल जा ति निजा द गं द न व
सो द ग ४।३०। ४।३०। ४।३०॥ पहिले द १।१० सो गुरु सो म द्य
मो अ ठ ८ सो गुरु सो अ त मे। द स सो गुरु पु नि सा ठी सो ८ जा ग

१७ चरि ज्ञान वसोम दस्य य कुर्य के अं स चटीन मो जो ने जा ते
सायनार्क ८।२८।१०।२२ पु निष्पु लकी न २।२८।१०।२२ ते ही
ते पावे चर पंठा ती स न सां चर ~~स~~ पंठा प ल जा ते होत है जो मेष
संक्रांती के दी रागर्द्ध के जैसां गुरु छ। या हो प वेदि को ना ठ प ल जा
से। म। हा ठ न के प ल ना हो ४।३० सो प ल जा ति निज द गं द न व
सो द गे ४।३०। ४।३०। ४।३०॥ पहिले द १।१० सो गुरु सो म द्य
मो अ ठ ८ सो गुरु सो अ त मे द स सो गुरु पु निष्पु ली सो ८ ना ग

गुनी नं ४०१३०० ॥ ११३२ ॥ २४०१ ६०१ ३००१

लीकैउ प रजोरे पुनीं चं न के चं क के कोती न सो जा गुनी सो गि वि
चर खंडा ने प्रथम ४५ खंडा द्वि गिय पंडा ३६ तृती य खंडा १५ सो
इ हां ती सर खंडा ५५ पावो ने हि सो सा य नार्क स्य जाशि वी हाय चं स २९
क ला १० वी क ला २२ गुनी नं जा नं ४३५१५०१ ३३० पुनी सा ही सो
जा गु लै कैउ प रजो रे जा नं ४३७ पु नि ती स ३० सो जा गु ली न
ल अं ४ सो प य १० पु नी प हिल पंडा ४५ द्वि सर खंडा
३६ ध ने पुनी लि ह को जो गु कि न जा नं च नं २५ सो सा य न स १११

मु नै सतया की ॥ ३० ॥ १२८ ॥ १२० ॥ १२८ ॥ ३८ ॥ १०५ ॥ १३५ ॥ १०५ ॥ ३० ॥
मि षु पुत्रिदिदि प द्विद्ध। च यु मि गल वै ११ ॥ १३ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १३
११ ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
उ द यं प्र यांति की टा दि गा द ज्य दि को स मे ति ॥ २१ ॥ न ग ७
ष उ ८ ग जां ८ कां ८ झां १० ॥ क झे लां ७ ग ८ ष द्वां ८ ग ८ नि पु
निर जाते। की लु व शु क्रः प्र ती च्यां म् ॥ उ उ द य ति दि मि १०
मा ८ वृ द्यं ७ ग र्व ८ गा ७ म् ७ रु ८ ष द्वा ८ दि ७ ग ज ८ ॥ द न १०
ल को लो ८ जा च पु र्वा स मे ति ॥ २२ ॥ ष डि ८ पु ५ द स ८ ग जां कि १२

[illegible]

तो यदा काः शेषां शकाश्च पतीता प्रगच्छन्त्या १५॥ येत्यान
गो निग्राहविहता। अस्मिन् ज्योतिषे ५ नका देया स्यन्ती च फलव
त्स्फुटयोस्फुटौ तौ ॥ १३॥ कुज उघ नृगजानां चेच्चत्तको
तिमः ११ स्यादश १० हतपरीशेषां शानगा ७ द्य ७ मि ३ नृकः ॥
फलमिषु दत्ते ३५ युक्तमसगो मि १७ निबा शौ ५७ नवती गति
ने फलं स्यात्ततदा जैन पुर्व ॥ १४॥ त्रिनपैः शरणि युति शरके
नगन्तु पै नि नवैः क्रमात्कुजाद्याः १६३ १७५ १८५ १९७ १९९ ॥
अजल के दल वै प्रयांती वक्रं न गशांते पमिते ब्रजंति मार्ग

॥ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ ॥ इति लोप यमे २८ रुद्रेति पूर्व
गुरु रीदै १४ रवि लस्तु सप्त चं १७ ॥ स्वस्योदयनागसंवीहीनेन
गंगां पत्र यांति चास्तुम् ॥ १८ ॥ २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ ॥ नवज्ञा ५० ॥
जिनै २४ परे जे नमो रुदये सो यदि नै १५५ नगादि नु कि १७७ ॥
उदयो न नवै स्या ही दु नी १८ ॥ प्रागस्तोदि गहनै ३९० ॥ अष
हस्तु रै ३३६ स्या ॥ १७ ॥ वक्रोदयादि गतांशक तोषी कात्याः
कैद्रा काः क्षीति सतादि २४ ता निश्चि न काः ॥ १८ ॥ गंगां ९३
कादश १० हतां ग ६ हता कु १ न का वक्राद्यमापदिवसे क्रम ०

३२
सरी जाई मां मे। जो त्रं क द ने है ते द ने १८। ३२। ३८ सो ठी गु
की न त रे के त्रं क जो ने जाय १ १ १ २। ३८ पुनि सा ठी ६० सो गु रो
त रे के त्रं क जो रे जात ६६७५८ मा ज्य पु नि जा न क सो मा ज्य ने
मा गु ली न सो इ हां मा ज कु त्र दी क रु गो मा ज्ये घो रो ह तो ते ह ते
प हित मा गु न पा वो सो ल द्यं ० से षं + ६६७५८ सो सा ठी गु न की
न जात ४००५५४० पुनः मा ज के शा १८७७ ८३ न कं ल द्यं २० से
से षं ४६८८० सो सा ठी ६० सो गु रो जा त २६६२८०० पु नि

माज क सो १०१७ २३ जागुलीन लछं १५ शोषण गः न्यसि कै
तीनि जाग जाग जापं ० १२० ११५ सो द ह को मंद फलें हान पुनि मध्य का
मुरुज मोद न न न क न व कै द न सा त जो के द मे वा दि द्या नाशि
होय तो द न जो तुला दि द्या ६ रा शि हो इ तो न सा सो इ हां के द
तुला दि है द ते द ते मध्य म सूर्य सो घटा इ दिन जातो मंदो स्य यो कः
२। २। ५३। २२ न्यथ नान य नं न्यत्र न्यनां शान यनं शा का द्य न १५५९
पुनि चारि सै च वा सि स ४४४ घटा इ दिन जातं १२१७ पुनि सा ठी ६०
सो जागुलीन लछं २० पा ये दिन सै ११२५